UG-IV class by - Dr. Manisha Kumari

व्यापार चक्र (TRADE CYCLE)

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में व्यापार चक्र एक चक्रीय उतार चढ़ाव की विशिष्टता विस्तार तथा संकुचन की तरंगों का अदल-बदल है। व्यापार चक्र में कुल रोजगार, आय, उत्पादन तथा कीमत-स्तर में उतार चढ़ाव होता है।

प्रो. केन्स ने अपनी पुस्तक Treatise of Money में व्यापार चक्र को निम्न तरह से परिभाषित किया है।

"व्यापार चक्र अच्छे व्यापार की उन अवधियों से निर्मित है जिनकी विशिष्टता बढ़ती कीमतें तथा कम बेरोजगार प्रतिशतता है और जो अवधियाँ गिरती कीमतों तथा ऊँची बेरोजगार प्रतिशतता से युक्त बुरे व्यापार की अवधियों के साथ अदल-बदल है। उनकी अवधि नियत तय नहीं होती, परन्तु वे इस अर्थ में चक्रीय होते हैं कि संकुचन तथा विस्तार की अवस्थाएँ अक्सर तथा पर्याप्त रूप से मिलते-जुलते ढंग पर बार-बार आती है।"

व्यापार चक्र की अवस्थाएँ —
(Phases OF TRDE CYCLES)

भिन्न-भिन्न अर्थशास्त्रियों ने व्यापार-चक्र के मार्ग को विभिन्न अवस्थाओं में बाँटा है।

के० ई० बोल्डिंग के अनुसार

(I) विस्तार अथवा समृद्धि — (Expansion)
(II) अवरोध (Recession)
(III) अवसाद (Depression)
(IV) पुनरुद्धार (Recovery)
(V) पूर्ण रोजगार (Full Employment)

* समृद्धि (Prosperity) → समृद्धि अवस्था में माँग, उत्पादन, रोजगार तथा आय ऊँचे स्तर पर होते है। वे कीमतें बढ़ाते है परन्तु मजदूरी, वेतन, ब्याज दरें, किराया तथा वेतन, कीमतों में वृद्धि के अनुपात में बढ़ते है। कीमतों तथा लागतों के अन्तर से लाभ की मात्रा बढ़ जाती है। समृद्धि अर्थव्यवस्था को अति पूर्ण रोजगार स्तर पर पहुँचा सकता है और कीमतों में स्फीतिकारी वृद्धि लाती है।

* पूर्ण रोजगार (Full employment) - पूर्ण रोजगारी एक ऐसी अवस्था है जिसके बाद प्रभावी माँग में वृद्धि उत्पादन तथा रोजगार में वृद्धि नहीं करती बल्कि स्फीति लाती है।

* (Recession) अवरोध → यह वह स्थिति होती है जब उद्यमी तथा व्यवसायी बहुत सतर्क हो जाते है। इस अवधि में संकुचन लाने वाली शक्तियाँ जैसे स्टॉक में परिसमापन, बैंकिंग प्रणाली में तनाव इत्यादि अन्ततः विस्तार की शक्तियों पर विजय प्राप्त कर लेते है।

* पुनरुत्थान (Recovery) → इस स्थिति में निवेश को प्रोत्साहन मिलता है। प्रेरित निवेश में वृद्धि माँग में वृद्धि लाती है। साख का विस्तार होता है, निवेश, रोजगार, उत्पादन, आय तथा कीमतों में वृद्धि की संचयी प्रक्रिया स्वयं अपना पोषण करती है और आत्म-समर्थक बन जाती है।